Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

लघु चित्रों में मेवाड़ की कला-आध्यात्मिकता को प्रकट करते आर्ष-रामायण चित्र

मोनिका राजपूत
शोधार्थिनी, डी.ई.आई. डीम्ड यूनिवर्सिटी, दयालबाग. आगरा।

Article Info
Volume 4, Issue 6
Page Number : 143-149

Publication Issue :
November-December-2021

Article History
Received : 15 Nov 2021
Published : 30 Nov 2021

शोध सार:- मेवाड़ क्षेत्र में मिलने वाले चित्रकला संबंधी साक्ष्य स्पष्टत: इस तथ्य को उभारते हैं कि चित्रकला संबंधी प्रवृत्ति का मेवाड़ में अपना मौलिक स्वरूप रहा है। मेवाड़ में पनपने वाली चित्रकला शैली को नामकरण की कई संज्ञाओं से होकर गुजरना पड़ा। मेवाड़ शैली की पुस्तक चित्रण परंपरा की अधावधि अत्यंत प्राचीन है। ये चित्रित पांडुलिपियाँ मेवाड़ में चित्रकला के विकासशील स्वरूप को प्रकट करती हैं। मेवाड़ में इस स्वरूप में विकसित होने वाली चित्रकला की विद्वानों, कला समीक्षकों ने विविध रूपों में व्याख्या की है। समाज की आवश्यकता पूरी करने के लिए कलाकारों ने सरल से सरल व क्षिप्र तौर-तरीके अपनाए होंगे, जिनसे इन चित्रों में और भी अधिक गति उत्पन्न हो गई है।[1] कथात्मकता के लिए चित्र-धरातल को अलग-अलग तलों में बांट लिया गया है। ये चित्र आज के समाज को भी आध्यात्मिक प्रेरणा एवं आध्यात्मिक तोष प्रदान करने के जबरदस्त माध्यम प्रमाणित हो सकते हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से लघु चित्रों में मेवाड़ की कला अध्यात्मिकता को प्रकट करते आर्ष रामायण चित्रों का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द:- मेवाड़ चित्रकला, आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्ष-रामायण।

शोध प्रविधि:- इस शोध प्रपत्र के लिए शोध सामग्री अधिकांश रूप में द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गई है। इसमें ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, विश्लेषण व वर्णनात्मक दृष्टिकोण के साथ-साथ शोधार्थिनी ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी साझा किया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

प्रस्तावना:- मेवाड़ के चित्र, अपने युग की निरपेक्ष एवं धार्मिक जीवन व्यवस्था, चित्रित उपादान भावानात्मक अनुभूतियों तथा समसामयिक भारत के प्रारंभिक सांस्कृतिक संबंधों को प्रकट करने वाली महत्वपूर्ण रचनाओं के रूप में उभरे हैं। मेवाड़ मूल के प्रारंभिक जैन शैली के सर्वप्रथम एवं सर्वोत्तम ताड़पत्री चित्रों में वि.स.1317 (1260ई.) का आहाड़ में गुहिल तेजसिंह के राज्यकाल में (1255-1263ई.) में चित्रित "श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रचूर्णी" (सावग्ग पडिक्क मण चूण्णी) है।[2] मेवाड़ की 15वीं शताब्दी तक की चित्रकला संबंधी रचनाएं अधिकांशत मेवाड़ के निवासियों के आध्यात्मिक विपाशा को प्रकट करती हैं। वस्तुत: 11वीं से 15वीं शताब्दी की मेवाड़ी की चित्रकला में अधिकांशत: आध्यात्मिक पिपासा एवं आध्यात्मिक साधना की तुष्टि का एक जबरदस्त प्रयत्न दृष्टिगत होता है, मात्र धार्मिक भावनाएं प्रकट नहीं होती। [3]इस प्रयत्न में इन चित्रों के सृजन से व्यष्टि रूप में स्वयं सृजक कलाकार और समष्टि रूप में समसामयिक समाज

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

निश्चित रूप से आध्यात्मिक प्रेरणा ग्रहण कर पाया है और उसे तोष का अनुभव हुआ है। वाल्मीकि रामायण का एक प्रसिद्ध चित्रित्र हस्तलिखित ग्रंथ आर्ष रामायण (अरण्य काण्ड) के नाम से है, जिसका निर्माण दक्षिणी राजस्थान के गुहिल वंशीय राजपूत राज्य मेवाड़ की, राजधानी उदयपुर में विक्रम संवत 1706 से 1710/ 1649–1653 ई. के मध्य किया गया था।[4] आर्ष रामायण के सातों कांडों पर चित्रित पुस्तकें देश–विदेश के विभिन्न संग्रहालयों में संग्रहित हैं।

सीमांकन:- अध्ययन हेतु शोधार्थिनी ने आर्ष रामायण, अरण्यकाण्ड, जोधपुर के चित्रों का अध्ययन किया जिनमें से शोधार्थिनी द्वारा कुछ चित्रों को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

चित्र विवेचना:- विवेचना की दृष्टि से आर्ष रामायण के निम्न चित्रों का विश्लेषण किया जा रहा है जिनमें अरण्यकाण्ड में घटित कुछ घटनाओं को विभक्त किया गया है। निम्न चित्र राजस्थान, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर में संग्रहित हैं। अरण्यकाण्ड में वाल्मीकि रामायण के आधार पर कुल 36 चित्रों की रचना की गई है। चित्रकार–अली, लेखक–महात्मा हीरानंद, वर्ष 1651 ई.। महाराणा जगतसिंह प्रथम (1628–1652 ई.) 23*39.5 सेंटीमीटर।[5]

चित्र संख्या 1:- सीता जन्म कथा।

इस चित्र में सीता जी के जन जन्म की कथा को दर्शाया गया है और मिथिला पुरी के राजा जनक अपनी पत्नी सहित खेतों में हर चला रहे हैं। देवी देवताओं को आकाश से पुष्प वर्षा करते हुए दर्शाया गया है चित्र के एक और भाग में, सीता को अपनी माता के साथ बैठकर वार्तालाप करते चित्रित्र गया है।

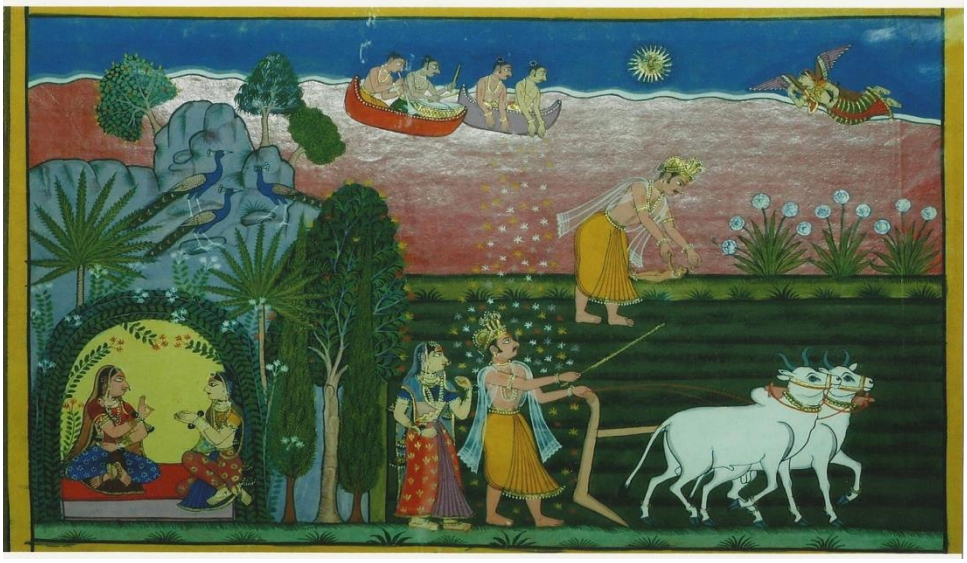

चित्र संख्या 1:- सीता जन्म कथा, आर्ष रामायण, 23*39.5 cm

चित्र संख्या 2:- श्री राम लक्ष्मण का विराध राक्षस से सामना।

चित्र संख्या 2:- श्री राम लक्ष्मण का विराध राक्षस से सामना, आर्ष रामायण, 23*39.5 cm

यह अरण्यकांड का पंचम चित्र है। इस चित्र में प्रभु श्री राम अपनी पत्नी सीता व भ्राता लक्ष्मण के साथ दंडक वन में प्रवेश करते हुए दर्शाए गए हैं। जहां ऋषियों से उनका मिलाप होता है। जब आश्रमवासी व त्रषियों से आज्ञा पाकर वे दंडक वन में विचरण करने हेतु आगे जाते हैं तभी मार्ग में उन्हें विराध नाम का राक्षस मिलता है जो कि त्रिशूल धारण किए हुए था तथा रुधिर से भीगा चमड़ा ओड़े हुए था। राम, लक्ष्मण और सीता को देखकर विराध को क्रोध आ जाता है। वह सीता को झपट कर गोद में उठा लेता है और श्री राम से सीता को छोड़कर वन से चले जाने के लिए कहता है। किंतु श्रीराम अपनी वीरता का परिचय देते हुए उस दुष्ट राक्षस का वध कर सीता की रक्षा करते हैं। कलाकार द्वारा चित्र के धरातल को विभिन्न भागों में बांट कर कथा को प्रस्तुत किया गया है जिसमें एक ओर सीता, श्री राम और लक्ष्मण के पीछे खड़ी हुई है और विराट भूमि पर तीरों से घायल होकर गिर रहा है वहीं दूसरी ओर विराट के एक हाथ में त्रिशूल दर्शाया है और दूसरे हाथ से उसने सीता को उठा रखा है। इस प्रकार कथा को समझाने हेतु चित्रकार ने सीता व विराध को, एक ही चित्र में बार-बार चित्रित किया है।

चित्र संख्या 3:- शरभंग ऋषि के आश्रम में।

इस चित्र में दर्शाया गया है कि जब श्री राम विराट का वध करके जानकी व लक्ष्मण सहित शरभंग ऋषि के आश्रम में पहुंचते हैं, तब उनका दर्शन पाकर ऋषि शरभंग श्री राम को आगे मार्ग में आने वाली विभिन्न बाधाओं से सचेत सकते हैं तथा उन बाधाओं से लड़ने के लिए महान पुण्य फलों का समर्पण करने पश्चात प्राप्त अपने भौतिक शरीर को अग्नि में समर्पित कर देते हैं और दिव्य देह धारण कर ब्रह्मलोक को चले जाते हैं। यह आर्ष रामायण का सातवां चित्र है।

चित्र संख्या 3:- शरभंग ऋषि के आश्रम में, आर्ष रामायण, 23*39.5 cm

चित्र संख्या 4:- जटायु दर्शन।

इस चित्र में श्री राम, महर्षि अगस्त्य जी से पूछते हैं कि प्रभु यहां वन में, कोई ऐसा स्थान है जो बड़ा हो, जहां जल सरलता से प्राप्त हो सके और जहां हम तीनों कुटी बनाकर स्वच्छंदता से वास कर सकें। इस पर अगस्त्य जी उन्हें पंचवटी नामक विख्यात एवं अत्यंत सुंदर स्थान के विषय में बताते हैं। तब श्री राम, लक्ष्मण एवं सीता सहित पंचवटी जाने की आज्ञा लेकर अगस्त्य ऋषि के आश्रम से पंचवटी की ओर प्रस्थान करते हैं। मार्ग में श्री राम को विशाल शरीर वाले गिद्धराज जटायु से मेल का अवसर प्राप्त होता है। गिद्धराज जटायु स्वयं को गरूड़ जी से उत्पन्न हुआ बताते हुए, अपना नाम जटायु व माता का नाम श्येनी बताते हैं। श्री रामचंद्र जी प्रफुलता से जटायु से मिलकर सुप्रसिद्ध पंचवटी को प्रस्थान करते हैं।

चित्र संख्या 4:- जटायु दर्शन, आर्ष रामायण, 23*39.5 cm

चित्र संख्या 5:- लक्ष्मण द्वारा पंचवटी में कुटिया निर्माण।

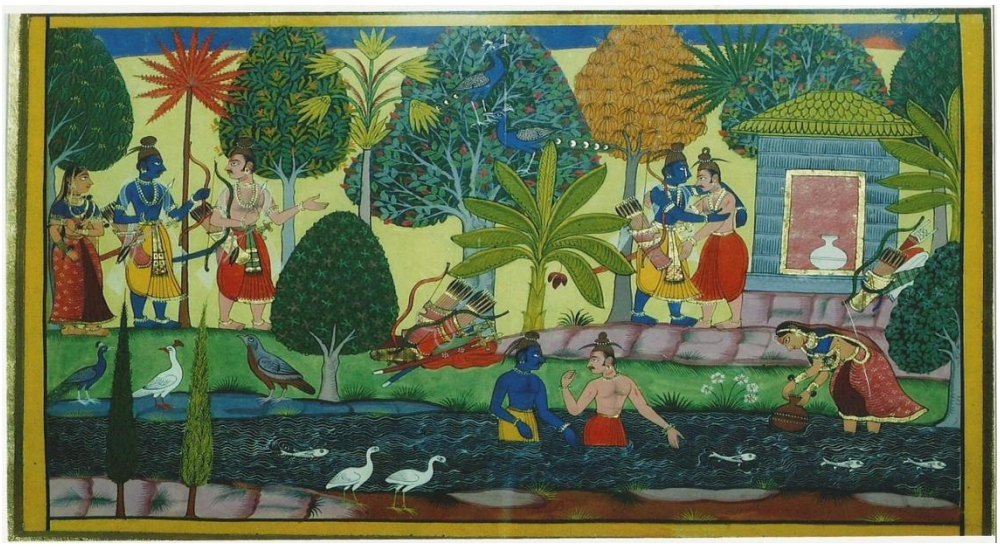

चित्र संख्या 5:- लक्ष्मण द्वारा पंचवटी में कुटिया निर्माण, आर्ष रामायण, 23*39.5 cm

पंचवटी पहुंचकर श्री राम, लक्ष्मण से कहते हैं कि महर्षि श्री अगस्त्य जी ने जिस सुंदर स्थान के विषय में बताया था हम तीनो उस सुंदर स्थान, पंचवटी में आ पहुंचे हैं। लक्ष्मण निवास करने योग्य स्थान का निर्णय करने में तुम चतुर हो अत: तुम, हम और सीता जहां प्रसन्नता से रह सके तुम ऐसे स्थान को खोज कर निवास हेतु कुटी का निर्माण करो। श्री राम की आज्ञा से लक्ष्मण वैसा ही करते हैं। लक्ष्मण पंचवटी में निवास हेतु एक सुंदर कुटी का निर्माण करते हैं। उनकी बनाई कुटी को देखकर श्री राम परम प्रसन्न होते हैं एवं उन्हें स्नेह से अपने गले लगा लेते हैं।

चित्र संख्या 6:- सुर्पणखा का राम- लक्ष्मण को देखना।

आर्ष रामायण के 26वे चित्र में सूर्पनखा अपने भाई रावण से मिलने लंका पहुंचती है और मंत्रियों के मध्य अपने भाई को कटु वचन कहती है। तब रावण सुर्पनखा से उसकी इस दशा को करने वाले के विषय में पूछता है! वह रावण को दंडकारण्य में श्रीराम एवं उनके भ्राता लक्ष्मण व पत्नी सीता के आगमन व खर–दूषण और त्रिशिरा आदि राक्षसों को युद्ध में मार डालने का वृतांत बताते हुए स्वयं को विरूप किए जाने की घटना के विषय में बताती है।

चित्र संख्या 6:- सुर्पणखा का राम- लक्ष्मण को देखना, आर्ष रामायण, 23*39.5 cm

एक दिवस उस सुंदर स्थान पर एक राक्षसी जिसका नाम सुर्पणखा था, स्वयं की इच्छा से घूमती हुई वहां आ पहुंचती है इतने सुंदर और कोमल काया वाले श्री राम और लक्ष्मण को देखकर वह उन पर मोहित हो जाती है। सुर्पणखा श्री राम को विवाह हेतु प्रस्ताव देती है जिसे सुनकर श्री राम अस्वीकार करते हुए सुर्पणखा को लक्ष्मण से विवाह करने हेतु प्रस्ताव देते हैं। सुर्पणखा दशानन रावण की बहन थी।

चित्र संख्या 7:- सुर्पणखा का रावण को राम का वृतांत कहना।

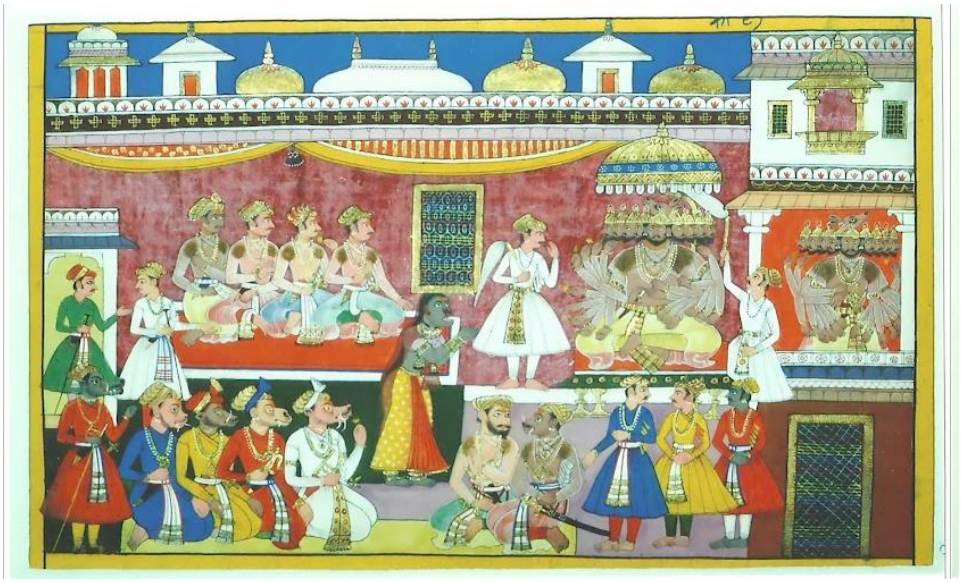

चित्र संख्या 7:- सुर्पणखा का रावण को राम का वृतांत कहना, आर्ष रामायण, 23*39.5 cm

आर्ष रामायण के 26वे चित्र में सूर्पनखा अपने भाई रावण से मिलने लंका पहुंचती है और मंत्रियों के मध्य अपने भाई को कटु वचन कहती है। तब रावण सुर्पनखा से उसकी इस दशा को करने वाले के विषय में पूछता है! वह रावण

को दंडकारण्य में श्रीराम एवं उनके भ्राता लक्ष्मण व पत्नी सीता के आगमन व खर–दूषण और त्रिशिरा आदि राक्षसों को युद्ध में मार डालने का वृतांत बताते हुए स्वयं को विरूप किए जाने की घटना के विषय में बताती है।

निष्कर्ष:- संपूर्ण अध्ययन के परिणाम स्वरुप यह कहा जा सकता है कि मेवाड़ शैली में चित्रित आर्ष रामायण चित्र, लघु चित्रों में मेवाड़ की कला अध्यात्मिकता को प्रकट करने में सफल रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. व्यास, डॉ. राजशेखर:– मेवाड़ की कला और स्थापत्य, राजस्थान प्रकाशन, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर–2, मॉडर्न प्रिंटर्स. गोधों का रास्ता, रत्ना ऑफसेट प्रेस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1988, पृष्ठ–116
2. वशिष्ठ, डॉ.आर.के पूर्व उल्लेखित पृष्ठ–04, नाहटा, अमरचंद: शोध पत्रिका, भाग–5, अंक 03, पृष्ठ–46, शर्मा, डॉ. गोपीनाथ: ग्लोरिज ऑफ मेवाड़, पृष्ठ–87, कृष्ण चैतन्य: राजस्थानी टेंडिसन्स, अभिनव पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 1982, पृष्ठ–91, अंधारे: डॉ. श्रीधर: क्रोनोलॉजी ऑफ मेवाड़ पेंटिंग्स,पृष्ठ–36–37
3. व्यास, डॉ. राजशेखर:– मेवाड़ की कला और स्थापत्य, राजस्थान प्रकाशन, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर–2, मॉडर्न प्रिंटर्स. गोधों का रास्ता, रत्ना ऑफसेट प्रेस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण – 1988, पृष्ठ 117
4. श्रीमाली, डॉ. मनोहर:– प्रकाशक – आर्यावर्त संस्कृति संस्थान, डी–48, गली नंबर–3, दयालपुर, करावल नगर रोड, दिल्ली – 110094, पृष्ठ–83
5. श्रीमाली, डॉ. मनोहर:– प्रकाशक – आर्यावर्त संस्कृति संस्थान, डी–48, गली नंबर–3, दयालपुर, करावल नगर रोड, दिल्ली – 110094, पृष्ठ–193